हिन्दी काव्य परंपरा में राधा और कृष्ण के दिव्य प्रेम का चित्रण

गणेष कुमार शर्मा

रानी दुर्गावती विष्वविद्यालय जबलपुर

E-mail: ganeshkumarsharma2014@rediffmail.com

प्रस्तावना– जैसा कि सिद्व है, कि राधा की कृपा के बिना श्रीकृष्ण दर्षन असम्भव है। श्रीकृष्ण प्रेम में अपना सर्वस्व दान करने वाली राधा रानी उस अनुपम पवित्रोज्वल मूर्ति की महिमा और उनके माधुर्य का वर्णन करना सम्भावनाओं की सीमा से परे है। भागवत पुराण के दसवें स्कन्ध के 29 से 33 वें अध्याय तक "रास पंचाध्यायी" के नाम से पुकारे जाते हैं। इन अध्यायों मे रास लीला का विषषद वर्णन हुआ है।

उपलब्ध साहित्य–

(क) साहित्यिक रचनाएॅः–विद्यापति की पदावली, सूरसागर, बिहारी के दोहे, भ्रमरगीत सार, धर्मवीर भारतीय की कनुप्रिया।

(ख) धार्मिक साहित्यः– श्रीराम कृष्ण लीला मृत, श्रीमदभागवत

(ग) समीक्षात्मक कृतिः– आधुनिक ब्रज भाषा काव्य और कृष्ण भक्त कवि बल्लभदास के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन

शोध प्रविधि– प्रस्तुत शोध–पत्र में राधा और कृष्ण के प्रेम से सम्बंधित तथ्यों की व्याख्या एवं प्रस्तुतिकरण के लिए व्याख्यानपरख विष्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

विमर्श– लालित्य ललित–निबंधों का अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है जो ललित–निबंधों को निबंध से पृथक करता है। आचार्य विद्यानिवास मिश्र लालित्य को राधा और कृष्ण की रम्यता से जोड़कर उसकी व्याख्या करते हुए कहते हैं कि–''लालित्य' का संबंध उस 'ललिता' से है, जो एक ओर षिवषक्ति की समंजसता है, दूसरी ओर वह स्वयं श्रीकृष्ण का पूर्व रूप है और तीसरी ओर दर्पण में जड़ी राधा की वह छवि है जिसपर यह अनुभव करते हुए कि प्रियतम उसे देख रहे हैं– राधा मोहित हो जाती है और वह छवि ललिता बन जाती है। इन सभी कथाओं के ललिता और लालित्य का संबंध समरसता, लीला, लीला का संबंध उत्कंठा और स्वरूप–विमर्ष से है। यह सब एक रचना में मिल जाए, यह दुर्लभ है। ललित रचना दुर्लभ है। ललित रचना बिरली ही होती है, मगर रंगीनशब्दावली के बल पर भाव–रंजना के बल पर कोई ललित बनना चाहे, तो वह अलग बात है।''[1] यही दुर्लभ संयोग ललित–निबंध की पहचान है। विभिन्न भाषाओं के साहित्य में राधा और श्रीकृष्ण के अलौकिक प्रेम और रास लीला के कथानक भक्ति, माधुर्य, वात्यसल्य, श्रृंगार का परिधान पहनाते हुए रागमय काव्य संसार की रचना की गई संस्कृत साहित्य में ही वैदिक युग से लेकर हिन्दी

साहित्य के वीरगाथाकाल ,भक्तिकाल, रीतिकाल और वर्तमान समय के आधुनिक कालीन साहित्य में राधा और श्रीकृष्ण के इस दिव्य एवं पारलौकिक प्रेम का चित्रण मिलता है। विद्वानों ने विद्यापति को राधा कृष्ण सम्बंधी चित्रण को श्रृंगारपूर्ण या मॉनसल अवष्य बताया है,किन्तु उसमें आत्मा के परमात्मा से एकीकरण की वही विभलता दिख पड़ती है। जो सूरदास के पदों एवं भ्रमरगीतसार के कथानक में राधा विरह के मूल मे स्पष्ट नजर आती है। जैसे विद्यापति का पद इस प्रकार हैः–

"भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि छल छल लोचन पानि ।

अनुखन राधा राधा रटइत आधा आधा बानि ।

राधा सयॅ जब पनितहि माधव माधव सयॅ जब राधा ।

दारून प्रेम तबहि नहि टुटत बादत बिरह क बाधा। "

हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पेज नं.150

प्रति छड ृकृष्ण का स्मरण करते हुए राधा कृष्ण रूप हो जाती है और अपने को कृष्ण समझकर राधा के वियोग मे राधा राधा रटने लगती है फिर जब होष में आ जाती है तो पुनः कृष्ण के बिरह में संतृप्त होकर कृष्ण कृष्ण करने लगती है इस प्रकार षुध और वेषुध दोनों अवस्थाओं में उन्हें विरह सहन कराता है।

"सुनौ श्याम यह बात और कोउ क्यों समझायकहैं।

दुहूॅ दिसि की रति बिरह बिरहिनी कैसे कै जो सहैं।

जब राधौं तब ही मुख माधौं माधौं रटति रहैं।

जब माधौं हवें जाति सकल तनु राधा बिरह दहैं ।"

सूरदास सूरसागर पेज न, 564

दोनों पदों में आत्मा एवं परमात्मा का एकीकरण है। वही विफलता दिख पडती है जो सूरदास के पदों एवं भ्रमरगीतसार के कथानक में राधा के विरह के मूल में स्पष्ट नजर आती है। "राधा कृष्ण के प्रेम को लेकर कृष्ण भक्ति की जो काव्य धारा चली उसमें लीला पक्ष अथात् ब्रम्हायार्थ विधान की प्रधानता रही है। उनमें केलि विलास, रास, छेड़ छाड़, मिलन की युक्तियॉ आदि बाहरी बातों का ही विषेष वर्णन है। प्रेमलीन हृदय की नाना अनुभूतियो की व्यंजना कम है।" किन्तु जो भी व्यंजना है वे मनोहारिणी है।"

हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र षुक्ल पेज न, 156

तो पर बारौं उरबसी ,सूनि राधिके सुजान।

तू मोहन कैं उरबसी , ह्वै उरबसी समान।।

बिहारी सतसई–बिहारी

इसी प्रकार विद्यापति के श्रृंगारिक वर्णन में पारलौकिकता परोक्ष रूप से विद्यमान है उसी प्रकार बिहारी के श्रृंगारिक चित्रण में छाई हुई कांतेय उद्भूत समर्पण हरिऔधं एवं धर्मवीर भारती जैंसे आधुनिक कालीन कवियों के वर्तमान काव्य ग्रथों में मिल जाती हैं। जैंसे अयोध्या प्रसाद उपाध्याय, हरिऔंध के प्रिय प्रवास का उदाहरण प्रस्तुत है।

"षोभाबारिधि की अमूल्य मणि सी लवण्यलीलामयी।

श्रीराधा मृदभाषिनी मृगदृगी माधुर्य सन्यमूर्ति थी ।।"

"तुम्हारी असंख्य सृस्टियों का क्रम

महज हमारे गहरे प्यार प्रगाढ़ विलास

और अतृप्त क्रीड़ा की अनंत पुनरावृत्यिॉ हैं। ओ मेरे स्रष्टा तुम्हारे अस्तित्व का अर्थ है।

मात्र तुम्हारी सृष्टि

तुम्हारी सम्पूर्ण सृष्टि का अर्थ है।

मात्र तुम्हारी इच्छा

और तुम्हारी सम्पूर्ण इच्छा का अर्थ हूँ

केवल मैं! केवल मैं!! केवल मैं!!!"

डॉ, धमवीर भारती कनुप्रिया पेज न,42

शरद पूर्णिमा की रात्रि में श्रीकृष्ण ब्रज में मन की सुन्दरियों के मन को हरने के लिए वंषी बजायी, वंषी की मधुर ध्वनि से आकर्षित होकर गोपियॉ स्वजनो को छोडकर वन में चली आयी जब भगवान कृष्ण ने उनको उपदेष में घर लौट जाने को कहा लेकिन गोपियों ने कोई मर्यादा को स्वीकार नही किया और प्रेम विहल होकर बोली प्यारे तुम तो मन की बात जानते हो तुम्हारे मधुर वाणी की मुखाकृति मेरे हदय में तुम्हारे प्रेम की अग्नि प्रज्वलित कर दी है। गोपियों की मर्म वाणी सुनकर श्रीकृष्ण द्रवीभूत हुए। तब श्री कृष्ण ने आनंद से परिपूर्ण होकर गोपियों के साथ रास क्रीडा• आरंभ कर दी, विभिन्न क्रियाओं के द्वारा सुन्दरियों के काम को उत्तेजित करते हुए श्रीकृष्ण ने गोपियों को स्मरण किया।

अन्त में श्रीकृष्ण अंतर ध्यान हो गए अब गोंपियों को विरह सताने लगा। वे कृष्ण मय हो गयी तथा कृष्ण की अनेक लीलाओं का स्मरण करने लगी। रास की थकान को दूर करने के लिए श्रीकृष्ण ने तरूणियों के साथ यमुना के जल की क्रीडा• की। तत्पष्चात गोपियॉ श्रीकृष्ण की आज्ञा से अपने घर चली गई। गोपियों ने श्रीकृष्ण में तनिक भी दोष नहीं देखी, क्योंकि योग माया से मोहित होकर वे ऐसा समझ रहे थे कि उनकी पत्नियॉ उनके साथ है।

प्रेम के रूप का दिग्दर्षन कराते हुए बल्लभदास जी कहते है कि बृज का प्रेम सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि इसका भेद प्रेम स्वयं नहीं पा सका है जिस प्रकार कुघात स्वर्ण रूप ग्रहण करने पर उसमें पुनः परिवर्तन नहीं हो सकती ठीक उसी प्रकार प्रेम रूपी पतंग के उदित होने पर उसे अंधकार विलुप्त नहीं कर सकता है। कवि

ने मानव–जगत को लोक बेद रूपी उदधि से त्राण पाने का एक मात्र साधन प्रेम को ही ठहराया है। इस प्रकार प्रेम की महत्ता को स्वीकार कर प्राणी मात्र के उद्वार का मूल मंत्र बताया है। तथापि भाव–रहस्य के उद्घाटन और प्रेम के महत्व निरूपण में उत्कृष्ठ काव्य कला के दर्षन होते है। भाषा की अभिव्यक्ति सौदर्य एवं अर्थ गंभीर कृति में है।

कवि वृन्दावन की प्राकृतिक सौंदर्य का मनोरम वर्णन करता है। वृंदावन आदिदैविक सौंदर्य का कगार है श्रीकृष्ण का नित्य निवास होने के कारण वृंदावन की छटा अनुपम है। वेणुनाद के द्वारा समस्त ब्राम्हण देवता, षिव सिद्वमुनि आदि अपने मूल सिद्वांत को भूल गये तथा सुनकर विमोहित हो गए। वेणुनाद के द्वारा जड और चेतन्य दोनों के धर्म बदल गए समस्त जगत मुरली के स्वर में अविरल हो गया। कवि ने आत्मा का परमात्मा से मिलन स्पष्ट किया है। जो अलौकिक पक्ष का प्रतिपाद्य है ।

गोवर्धन लीला में भी श्रीकृष्ण गाय दोहन करते हुए राधा की रूप माधुरी पर मोहित होकर उसे एक टक निहार रहे है। श्री कृष्ण और राधा की छवि अवर्णनीय है दोनों का मिलन आनंद का सृजन कर रहा हूँ। राधा जी की मधुर मुस्कान को देखकर श्रीकृष्ण के हाथ से दोहनी गिर जाती है और कृष्ण राधा के प्रेम में रंग जाते हैं।

निष्कर्षः– यह कहा जा सकता है कि राधा और कृष्ण का प्रेम अलौलिक था। आचार्य निम्वार्क ने कृष्ण भक्ति का उद्घोष उत्तर भारत में किया कृष्ण को सच्चिदानन्द स्वरू परम चैतन्य माना गया। राधिका उनकी आल्हादाहिनी शक्ति। इस प्रकार राधा और कृष्ण की लीला को भक्ति में स्थान मिला।

उपसंहारः– संस्कृत साहित्य में वैदिक युग से लेकर हिन्दी साहित्य के वीरगाथा काल से भक्तिकाल, रीतिकाल और वर्तमान समय के आधुनिक कालीन साहित्य में राधा और कृष्ण के दिव्य एवं पारलौकिक प्रेम का चित्रण मिलता है।

विमर्षः– संदर्भ ग्रंथः–

1. विद्या पति की पदावली – विद्यापति
2. प्रिय प्रवास – अयोध्या प्रसाद हरिऔंध
3. सूरसागर – सूरदास
4. भ्रमरगीतक्षार – सूरदास
5. बिहारी सतसई – बिहारी
6. कनुप्रिया – डॉ.धर्मवरी भारती
7. श्रीराम कृष्ण लीलामृत – श्री नरहर रामचन्द्र परांजय
8. श्रीमदभागवत पुराण – वेदव्यास
9. समीक्षात्मक कृति – आधुनिक ब्रज भाषा काव्य और कृष्ण
   भक्त कवि बल्लभदास के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ. अषोक उपाध्याय
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल